साहित्यसुधा

साहित्यकारों की वेबपत्रिका

साहित्यकारों की रचना स्थली

वर्ष: 2, अंक 37, मई(द्वितीय), 2018

13 मई 2018, मदर्स -डे पर विषेष:

भारतीय मां है बेमिसाल

मां , तुझे सलाम !

घनश्याम बादल

दुनिया भर में मई के दूसरे रविवार को मांओं को सम्मान देने के भाव के साथ "मदर्स -डे " मनाया जाता है । जहां पश्चिमी जगत की 'मां' सफल कैरियर के साथ आत्मकेंद्रित जीवन जीती है , वहीं भारतीय 'मां' अपने कैरियर व अपनी उन्नति के बजाय आज भी अपने बच्चों के हित के लिए कहीं ज्यादा जीती है , और भारतीय नारी अपनी पूर्णता का अहसास तभी करती है जब वह मां के रूप में सामने आती है ।

आज भी दुनिया का सबसे प्यारा शब्द 'मां' ही है जो न केवल मानव अपितु हर जीव को समान रूप से लुभाता है 'मां' शब्द । भले ही अलग - अलग देशों में बोलने में अलग हो पर , दुनिया के किसी भी कोने में जाईए, हर जगह का शिशु सबसे पहला जो शब्द बोलना सीखता है वह मां ही होता है ।

मां से ही सृष्टि का निर्माण हुआ है , 'मां' ने ही इंसान को सभ्य बनाया । यह मां का ही जिगर है कि वह अपनी सारी खुशियां व आराम, त्याग कर केवल अपनी जान को जोखिम में डाल कर बच्चे के सलामत रखती है, उसके लिये मौत से भी टकरा जाती है , ऐसा दुनिया के किसी भी कोने में बसने वाली मां बिना किसी झिझक के कर डालती है ।

भारत के इतिहास में बहुत ही बहादुर, साहसी और विदुषी माताएं हुई हैं। जिनकी प्रेरणा से उनकी संतानें विश्व में न केवल चर्चित और बहुप्रषंसित हुई वें अपना और मांओं का नाम अमर कर गईं। आइए आज मात् दिवस के अवसर पर जानें उन वीरांगना स्नेहशील व संतानों पर जान छिड़कने वाली माताओं के बारे में...

भारत की यें बेमिसाल मांएं

सीता:

त्रेता में जाएं तो एक मां के रूप में सीता अनुपम ठहरती हैं । य़दि गौर से देखा जाए तो रावण वध के बाद अयेध्या लौटने पर राम द्वारा वनवास दिए जाने के बाद उनका सारा जीवन अपने बेटों लव कुष के जीवन को संवारने में बीता।

महर्षि वाल्मीकी के सहयोग से उन्होने सारी कठिनाईयां झेलते हुए भी लव कुष को अप्रतिम वीर व विद्वान बनाया और अंततः वें ही रामराज्य के उत्तराधिकारी बने ।

शकुंतला:

पति की अनुपस्थिति में बच्चे पालना कोई हंसी खेल नहीं है । उस पर भी अगर अपको वन में रहना पड़े तो और भी मुष्किल । पर , राजा दुष्यंत से गंधर्व विवाह कर मां बनने वाली शकुंतला को जब दुष्यंत भूल गए , पहचानने से भी इंकार कर दिया तब कण्व ऋषि के आश्रम में रह , बेटे भरत को शेरों से खेलने वाला बहादुर बनाने का काम शकुंतला जैसी मां ही कर सकती थी । ऐसी मां किसी देश गौरव से कम नहीं कही जा सकती है ।

रानी धर्मा:

मौर्य काल में सम्राट अशोक मौर्य सम्राट बिंदुसार और रानी धर्मा के पुत्र थे। अशोक की माता धर्मा विदुषी होने के साथ-साथ सुंदर भी बहुत थीं। बिंदुसार अपने समय के एक कमजोर राजा थे और उन पर दरबार और महल की राजनीति भारी पउती थी मगर धर्मा महत्वाकांक्षी होने के साथ ही राजनीतिक चालें चलने में भी सिद्धहस्त थीं। जब बिंदुसार अपने दूसरे पुत्र सुषिम को राजा बनाने के लिए करीब करीब तैयार थे तब धर्मा के सहयोग व मार्ग दर्षन से अशोक राजा बने । सम्राट अशोक के ओजस्वी व्यक्तित्व का निर्माण करने वाली उनकी मां धर्मा ही थीं। एक तरह से कह सकते हैं भारत को एक के में ।

झांसी की रानी:

‘ ‘खूब लड़ी मर्दानी..... ” कहे जाने वाली झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ऐसी ही एक और मां थी उनके पुत्र की जन्म के कुछ महीने बाद ही मृत्यु हो गई थी। तब उन्होंने अपने ही परिवार के पांच साल के एक बालक दामोदर राव को गोद लिया और उसे अपना दत्तक पुत्र बनाया। जब अंग्रेजों ने झांसी पर आक्रमण किया, तब रानी घोड़े पर सवार हो, हाथ में तलवार लिए अपनी पीठ पर पुत्र दामोदर को बांधे हुए अंग्रेजों पर टूट पड़ीं। अंग्रेजों से बहादुरी से लड़ते-लड़ते रानी गंभीर रूप से घायल हो गईं। मृत्यु से पहले उन्होंने एक बार दामोदर की ओर प्यार से देखा और फिर उनके वे तेजस्वी नेत्र हमेशा के लिए बंद हो गए । वास्तव में प्रणम्य है ऐसी वीरांगना मां ।

जीजाबाई:

भारत में वीर षिवाजी का नाम यदि किसी परिचय का मोहताज नहीं है तो उसका सारा श्रेय जाता है उनकी वीरांगना मां जीजाबाई को । उन्होने अपने बेटे की षिक्षा के लिए दूरदृष्टि का परिचय देते हुए समर्थ गुरु रामदास को चुना और षिवजी में कूट - कूट कर देशभक्ति के भाव भरे उन्हे छापामार गुरिल्ला युद्ध पद्धति में पारंगत किया , उनमें नारी के प्रति सम्मान के अप्रतिम भाव भरे और एक देशभक्त और बहादुर शिवा के व्यक्तित्व का निर्माण किया । सचमुच एक सच्ची मां थी जीजाबाई ।

पुतलीबाई :

राष्ट्रपिता कहलाने वाले मोहनदास कर्मचंद की मां थी पुतलीबाई । गांधी ने बार बार माना है कि उनके जीवन पर सबसे ज्यादा प्रभाव उनकी मां का ही पड़ा । जब गांधी केवल 17 वर्ष की आयु में कानून की पढ़ाई के लिए विदेशजाने लगे तब गांधीजी की मां पुतलीबाई अपने पुत्र को लेकर बहुत चिंतित थीं। उन्होंने गांधीजी से तीन वचन लिए- वे हमेशा शाकाहारी भोजन ही करेंगे शराब नहीं पिएंगे केवल अपनी पढ़ाई पर ही ध्यान देंगे। और गांधीजी ने भी अपनी मां को दिए वचनों का पूरी ईमानदारी से पालन किया । इस प्रकार गांधी जी के जीवन का निर्माण करने वाली भी मां ही थी ।

आइ पी एस अनुकुमारी :

आज के आधुनिक भारत में जब भागमभाग का जीवन हावी हो रहा है जिसे भी देखें वही अपने कैरियर के पीछे व भौतिकतावद के पीछे भागता दिख रहा है तब हरियाणा की अनुकुमारी ने यू पी एस सी की परीक्षा में दूसरी रैंक हासिल की है । अपने संक्षिप्त साक्षात्कार में अनु कहती हैं कि उन्हे यह सब अपने करने की प्रेरणा अपने छोटे से बेटे के हित की भावना से मिली और वें अपनी सॅलता को अपने तीन साल के बेटे को समर्पित करती हैं । यानि एक मां अपने बेटे के लिए सारी जिम्मेदरियां निभा कर भी एक नया आसमान रच सकती है आज भी ।

नहीं है मां का विकल्प :

दुनिया में कितने भी बदलाव आए हों पर मां सदैव से एक सी ही रही है प्यार लुटाती , ममत्व बांटती ,बच्चे को सीने से चिपकाकर उसकी हिफाज़त करती , उसके लिए मौत से भी टक्कर लेती , अपने हिस्से का खाना भी उसे देती , खुद गीले में लेट कर भी बच्चे को सूखे में सुलाती , उसके सोने पर सोती उसके खा लेने पर खाती , अपनी छातियों के अमृतरस से से उसे जीवन देती पालती है , स्नेह धार से सींचती और भी जाने क्या - क्या करती मां । मां सचमुच अद्भुत औरै अनुपम होती है उसका विकल्प न है और न ही होगा ।

सबसे प्यारी है मां :

नहीं बदली मां: परिस्थितियों व समय के साथ मां में भी बदलाव आए हैं उसके सोचने ,समझने , पहनने ओढ़ने , कार्य करने व जिम्मेदारियों में वक्त के साथ तब्दीलियां आई हैं उसके आचार - विचार बदले हैं , उसने भी समय के साथ करवटें बदली हैं उसके हावों भावों में भी बदलाव देखे गए हैं , पर जहां तक उसके अपने बच्चों प्रति नजरिए की बात आती है तो आज भी वह उसी असीमित प्यार और स्नेह के साथ अपने बच्चों के लिए कुछ भी करने को तत्पर नजर आती है ।

हर मां अपने आप में बच्चे के लिए सीता , शकुंतला , जीजाबाई या झांसी की रानी होती है उसमें अनुकुमारी की सी काबिलियत होती है धर्मा जैसी कुव्वत होती है । अब ऐसी गुणवान और असीमित प्यार लुटाने वाली मां जब पास हो तो उसकी कद्र करना , उसका सम्मान कराना हमारा सबसे बड़ा फर्ज हो जाता है तो आइए सोचते हैं क्या कर सकते हैं हम मां को खुश करनें के लिए इस मदर्स डे पर

दीजिए भेंट :

अपनी मां की पसंद नापसंद तो जानते ही हैं आप , तो इसके अनुरूप उन्हे भेंट दें । अपनी पूजा पाठी मां के लिए उनके आराध्य की मूर्ति ला सकते हैं , उनका खुद का फोटो फ्रेम करवा के भेंट दे सकते हैं। सुबह सुबह उन्हे फोन पर एक मीठा सा मैसेज भी काफी है मां को खुश करने के लिए । कहीं बाहर हैं तो वीड़ियो चैट करके मां को हैप्पी मदर्स डे कहना न भूलें । घर पर हैं तो चुपचाप जाइए और श्रद्वा से उनके पैर छू लीजिए, मां के आषीर्वाद का झरना बह उठेगा आप पर ।

मना लो मां को :

अगर मां आपसे किसी बात पर नाराज है तो मदर्स -डे से बेहतर दिन और क्या होगा अपनी गलती मानते हुए उनसे माफी मांगने का । वैसे तो मां बच्चो से रूठती नहीं हैं पर फिर भी रुठी है तो कैसे भी मना लो , चिरौरी करो या मक्खन पालिश करो , उपहार दो या पैर छुओ या गोद में घुस जाओ , बीमार हैं तो उनके लिए दवाई का खास इंतजाम करो , पिता से या बहु से झगड़ी हैं तो समझौता करा दो पर मां को खुष करो हर हाल में । मां को खुष करने , उन्हे उनके महत्व का अहसास कराने का बेहतरीन मौका है इस बार का 'मदर्स डे' ।

तो इस बार मदर्स -डे अपने , परिवार और मां सबके लिए यादगार बना डालिए ।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें